पाठ्यचर्या · Curriculum

* पाठ्यचर्या दो शब्दों से मिलकर बना है। पाठ्य और चर्या
पाठ्य का अर्थ है "पढ़ने योग्य" अथवा "पढ़ाने योग्य"
तथा चर्या का अर्थ है, 'नियमपूर्वक अनुसरण'।

* इस प्रकार पाठ्यचर्या का अर्थ हुआ – पढ़ने योग्य अथवा पढ़ाने योग्य विषय वस्तु और क्रियाओं का नियमपूर्वक अनुसरण।

* पाठ्यचर्या को अंग्रेजी में curriculum कहते हैं। curriculum की उत्पत्ति लैटिन शब्द "currere" से हुई है, जिसका अर्थ (दौड़ का मैदान होता है) (Race course) (Run होता है)
इस संदर्भ में पाठ्यचर्या का अर्थ – किसी निश्चित लक्ष्य तक पहुँचने के लिए मार्ग पर दौड़ना होता है।

पाठ्यचर्या की परिभाषा —

विद्यालय के अन्दर होने वाली सभी प्रक्रिया पाठ्यचर्या के अन्तर्गत आती है। इन सभी प्रक्रिया में शिक्षक एवं छात्र दोनों परस्पर सम्मिलित होते हैं।

जैसे — जब कोई बालक विद्यालय में आता है तो उसके द्वारा या उसके साथ होने वाली सभी प्रक्रिया (पठन, पाठन, खेलकूद, हस्तकला, संगीत, सफाई, प्रार्थना, मध्यान्ह भोजन इत्यादि) सभी प्रक्रिया पाठ्यचर्या के अंतर्गत आती है।

* यदि पठन-पाठन की प्रक्रिया ही नहीं अपितु उन सभी प्रक्रिया पाठ्यचर्या के अंतर्गत आती है जो शिक्षा तथा शिक्षण से संबंधित होती है।

कनिंघम के अनुसार —

"पाठ्यचर्या यंत्र (साधन) है जो कलाकार (शिक्षक) के हाथों में अपनी सामग्री (छात्र) को अपने आदर्शों (उद्देश्यों) के अनुसार अपने विद्यालय में कोई रूप प्रदान करने के लिए होता है।"

फ्रोबेल के अनुसार —

"पाठ्यचर्या को मानव जाति के समस्त ज्ञान और अनुभव का सार समझना चाहिए।"

डॉ० लक्ष्मण स्वामी मुदालियर की अध्यक्षता

माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार — 1952-53

"पाठ्यचर्या का अभिप्राय विद्यालय में परम्परागत विधि से पढ़ाए जाने वाले केवल बौद्धिक विषयों से नहीं है। अपितु इसमें अनुभव की वह समस्त शामिल है जो बालक को विद्यालय में प्राप्त होता है।"

पाठ्यचर्या की आवश्यकता —

curriculum (पाठ्यचर्या) का संबंध सीखने वाले से होता है। इसका मतलब पाठ्यचर्या का संबंध सिखाने वाले से ही होता है। यह दोनों (सीखने वाले और सिखाने वाले) को जोड़ने वाली एक कड़ी है।

पाठ्यक्रम —

भाषा – Language

* भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा हम अपने विचारों, भावों को व्यक्त करते हैं। भाषा मुख से उच्चारित होने वाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह है, जिसके द्वारा मन की बात बताई जाती है। सामान्यतः भाषा को वैचारिक आदान-प्रदान की भाषा भी कहा जाता है।

भाषा का आरम्भ मानव के जन्म के साथ ही हो जाता है और जीवन भर चलता है। भाषा के विभिन्न कौशल जैसे- बोलना, सुनना, पढ़ना लिखना को पूरा करते हुए व्यक्ति भाषा में निपुणता प्राप्त करता है।

भाषा का अर्थ –

'भाषा' शब्द संस्कृत के भाष् (बोलना) धातु से बना है। इसका सामान्य अर्थ है।, जो बोली जाती है।
भाषा विचारों, भावों के आदान-प्रदान का माध्यम है। इसी आधार पर भाषा का अर्थ दो रूपों होता है।

① संकुचित (Narrow) या सीमित अर्थ → स्वेच्छिक (खुद की इच्छा) ध्वनि संकेतों की वह व्यवस्था जिसके माध्यम से कोई भाषा अपने समुदाय के साथ परस्पर सहयोग तथा व्यवहार करता है तो संकुचित भाषा कहते हैं।

② व्यापक अर्थ – वे सभी साधन भाषा कहे जा सकते हैं, जिनके प्रयोग को प्राणी समुदाय अपने विचार-विनिमय (आदान प्रदान) के लिए करता है। केवल मनुष्यों की ही नहीं बल्कि जीव-जन्तुओं, पशु पक्षियों, मानवेतर

प्राणियों की भी भाषाएँ होती हैं। तथा मनुष्यों द्वारा प्रयुक्त अंग संचालन, हाव-भाव, प्रदर्शन, प्रकाश प्रयोग, झंडी प्रयोग, शब्दांकन, उच्चारण, बल प्रयोग आदि प्रयोग सभी भाषा के अन्तर्गत समाहित हो जाते हैं।

भाषा की परिभाषा

पतंजलि के अनुसार — "भाषा वह व्यापार है जिससे वर्णनात्मक या व्यक्त शब्दों द्वारा अपने ~~विचारों~~ विचारों को प्रकट करते हैं।"

क्रोचे के अनुसार — "भाषा अभिव्यक्ति की दृष्टि से उच्चरित एवं सीमित ध्वनियों का संगठन है। (मन के भाव आदि प्रकट करना)

स्वीट के अनुसार — "ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों की अभिव्यक्ति ही भाषा है।"

प्लेटो के अनुसार — "भाषा विचार आत्मा की मूक बातचीत है पर यह जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो इसे भाषा की संज्ञा दी जाती है।

भाषा की प्रकृति —

भाषा नदी के जल के समान सदा चलती एवं बहती रहती है। जिस प्रकार से नदी के धरातल के अनुसार अपने स्वरूप को ग्रहण करती है। तो ठीक उसी प्रकार से भाषा भी देश, काल एवं सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप अपना स्वरूप विकास करती है। और भाषा

के अपने आन्तरिक गुण या स्वभाव को भाषा की-
प्रकृति कहते है।

(1) भाषा पैतृक सम्पत्ति - Language is ancestral property

भाषा पैतृक संपत्ति है। पिता की भाषा पुत्र को पैतृक संपत्ति की भांति ही प्राप्त होती है। किन्तु ऐसी बात नहीं है। यदि किसी भारतीय बच्चे को 1-2 वर्ष की अवस्था से अन्य देश में पाला जाए तो वह हिन्दी या हिन्दुस्तानी आदि भाषा न समझ सकेगा और ना ही बोल सकेगा। उस देश की ही उसकी मातृभाषा या अपनी भाषा होगी। यदि पैतृक भाषा संपत्ति होती तो भारतीय बालक भारत से बाहर कहीं भी रहकर बिना प्रयास के हिन्दी भाषा समझ और बोल लेता।

(2) भाषा अर्जित सम्पत्ति है:—

मानव अपने चारों ओर के समाज और वातावरण से भाषा सीखता है। भारत में उत्पन्न (जन्मे) बालक इंग्लैण्ड में रहकर इस लिए अंग्रेजी बोलने लगता है, क्योंकि, उसके चारों ओर अंग्रेजी वातावरण रहता है। अतः स्पष्ट है कि भाषा आस-पास के लोगों से अर्जित की जाती है। और इसीलिए यह अर्जित सम्पत्ति होती है।

(3) भाषा सामाजिक वस्तु है:—

भाषा पूर्णतया आदि से अन्त तक समाज से सम्बन्धित है। उसका विकास समाज में ही होता है। प्रश्न है कि व्यक्ति भाषा का अर्जन कहाँ से करता है। इसका मात्र उत्तर है— समाज से। इसलिए समाज स्वयं सामाजिक संस्था है।

4. भाषा परम्परागत है क्योंकि इसका अर्जन कर सकता है +
भाषा परम्परागत वस्तु है। व्यक्ति इसका अर्जन परम्परा और समाज से कर सकता है। स्वयं व्यक्ति इसमें परिवर्तन ही कर सकता है। किन्तु इसे उत्पन्न नहीं कर सकता है। समाज और परम्परा ही भाषा के जनक और जननी है।

5. भाषा का अर्जन अनुकरण द्वारा होता है —
भाषा को हम अनुकरण द्वारा सीखते हैं। शिशु की माता माँ जो कहती है। बालक उसे सुनता है। और धीरे-धीरे उसे स्वयं सीखने का प्रयास करता है। और उसे ही बोलता है।

अरस्तु — "अनुकरण मनुष्य का सबसे बड़ा गुण है"

6. भाषा सतत् परिवर्तन शील प्रक्रिया है —
भाषा में परिवर्तन ध्वनियों, शब्दों, पद बंधों एवं वाक्य रचनाओं आदि सभी स्तरों पर हो सकते हैं, लेकिन यह परिवर्तन इतने परोक्ष (पीछे छिपा हुआ) रूप से और इतने धीरे-2 होते हैं, कि उनका पता तत्काल नहीं चलता है।

भाषा के प्रकार

⇒ भाषा मुख्यतः तीन प्रकार की होती है।

1. वाचिक भाषा या कथित भाषा
2. आलेखीय भाषा या लिखित भाषा
3. सांकेतिक भाषा

1. वाचिक भाषा / मौखिक भाषा →

जब हम अपने भावों और विचारों को मुंह से बोलकर व्यक्त करते हैं। तो भाषा के स्वरूप को मौखिक भाषा कहते हैं। यह भाषा का अस्थाई रूप कहलाता है। जैसे- गाना सुनाना, बातचीत करना, भाषण देना, फोन पर बात करना, कविता सुनना, दैनिक वार्तालाप, टेलीविजन पर उद्घोषक (बोलने वाला) आदि भाषा मौखिक भाषा के उदाहरण

2. लिखित भाषा →

जब हम लिख कर अपने मन की बात व्यक्त करते हैं तथा दूसरों तक पहुंचाते हैं तो भाषा के इस रूप को लिखित भाषा कहते हैं। लिखित भाषा में किसी विचार को लम्बे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है। यह भाषा का स्थाई रूप कहलाता है। जैसे- किताबों, पत्रिकाओं, पत्रों और अखबारों की भाषा, अध्यापक का लिखकर समझाना बच्चों का लिखकर सीखना निबन्ध, कविता लिखना आदि भाषाऐं लिखित भाषा के उदाहरण हैं।

3. सांकेतिक भाषा →

जिन संकेतों के माध्यम से छोटे बच्चे या गूंगे लोग अपनी बात दूसरे को समझाते हैं तो

इन संकेतों को सांकेतिक भाषा कहा जाता है।
इनका अध्ययन व्याकरण में नहीं किया जाता है
जैसे — यातायात नियंत्रित करने वाली पुलिस,
गूँगे बच्चों की बातचीत, छोटे बच्चों के इशारे
इशारे —

* भाषा के कौशल
भाषा के चार कौशल होते हैं।
(1) सुनना (2) बोलना (3) पढ़ना (4) लिखना

* भाषा की विशेषतायें —

1. यह विचारों का आदान-प्रदान करने का माध्यम है
2. भाषा प्रतीकात्मक एवं ध्वनिमय है।
3. भाषा की क्षेत्रीय सीमा होती है।
4. भाषा परिवर्तनशील है।
5. भाषा सरलता एवं स्पष्टता की दिशा में सतत गतिशील होती है।
6. भाषा जटिल से सरल की ओर चलती है।
7. भाषा के द्वारा ही समस्त क्रियाएँ, जगत के ~~लिए~~ सभी कार्य, विविध गतिविधियाँ सम्भव हो पाती है।
8.